# MAA OMWATI INTERNATIONAL

# EDUCATION CITY

## V.P.O. Hassanpur, Teh. Hodal Distt. Palwal

## (HR.)

# NOTES

## BA 3RD SEM

## Sub:- UNDERSTANDING GANDHI

महात्मा गांधी का भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर उदय (Emergence of Gandhi on the Indian Political Scenario) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक निर्णायक मोड़ था। उन्होंने भारतीय राजनीति में केवल एक नेता के रूप में नहीं, बल्कि एक आंदोलन के प्रतीक के रूप में प्रवेश किया। नीचे इस विषय पर एक विस्तृत विवरण हिंदी में दिया गया है:

महात्मा गांधी का भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर उदय

महात्मा गांधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के बाद हुआ। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के उनके सफल प्रयोग ने उन्हें एक सशक्त नेता बना दिया था, और भारत लौटने के साथ ही उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान की।

प्रारंभिक चरण (1915–1919) गांधीजी ने पहले कुछ वर्षों तक भारतीय समाज और राजनीति को समझने में बिताए। उन्होंने गोपाल कृष्ण गोखले के मार्गदर्शन में भारत के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की और किसानों, मजदूरों और आम जनता की समस्याओं को निकट से देखा।

उनका पहला बड़ा राजनीतिक आंदोलन था:

चंपारण सत्याग्रह (1917):** बिहार के चंपारण जिले में नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण के खिलाफ पहला सफल अहिंसात्मक आंदोलन।

खेड़ा सत्याग्रह (1918):** गुजरात के खेड़ा जिले में अकाल के समय कर माफ करने की मांग को लेकर किया गया आंदोलन।

अहमदाबाद मिल श्रमिक आंदोलन (1918):** मजदूरों की मांगों को लेकर गांधीजी ने भूख हड़ताल की और अंततः समझौता हुआ।

इन आंदोलनों ने गांधीजी को एक जननेता के रूप में स्थापित किया और masses के साथ उनका सीधा जुड़ाव हुआ।

असहयोग आंदोलन (1920–1922) 1919 के जलियाँवाला बाग हत्याकांड और रॉलेट एक्ट जैसे दमनकारी कानूनों के खिलाफ गांधीजी ने **असहयोग आंदोलन** की शुरुआत की। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ: * सरकारी नौकरियों, स्कूलों, अदालतों का बहिष्कार

* विदेशी वस्त्रों की होली

* खादी और स्वदेशी को अपनाना

जैसे कदम उठाए। यह पहला बड़ा जनांदोलन था जिसमें पूरे देश ने भाग लिया।

गांधीजी की नेतृत्व शैली

अहिंसा और सत्याग्रह:** गांधीजी के नेतृत्व की सबसे विशेष बात थी अहिंसा का पालन और सत्य के लिए संघर्ष।

*जन आंदोलनों में भागीदारी:** उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक **जन आंदोलन** बना दिया।

सादा जीवन, उच्च विचार:** उनके जीवन की सादगी और नैतिक मूल्यों ने आम जनता को उनसे जोड़ा।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का भारतीय राजनीति में उदय केवल एक नेता के रूप में नहीं, बल्कि एक **सांस्कृतिक और नैतिक क्रांति** के रूप में हुआ। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया दृष्टिकोण दिया, जिसमें जनसाधारण की भागीदारी, आत्मबल, और नैतिकता को प्राथमिकता दी गई।

उनका आगमन भारतीय राजनीति में **एक नए युग** की शुरुआत थी – जहां स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आत्मिक भी मानी गई।

**महात्मा गांधी का राजनीति में नैतिकता का सिद्धांत**

1. **राजनीति और नैतिकता का अटूट संबंध**

गांधीजी के अनुसार, राजनीति बिना नैतिकता के **सत्ता का भ्रष्ट खेल** बन जाती है। उनका मानना था:

*"राजनीति को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता।"**

यहाँ "धर्म" का अर्थ किसी विशेष मज़हब से नहीं, बल्कि **सत्य, अहिंसा, करुणा, और न्याय** जैसे नैतिक मूल्यों से है।

2. **सत्य और अहिंसा – राजनीतिक नैतिकता की नींव**

गांधीजी ने राजनीति में दो मूलभूत सिद्धांत अपनाए: सत्य (Truth):** सार्वजनिक जीवन में पूर्ण पारदर्शिता और ईमानदारी।

* **अहिंसा (Non-violence):** विरोध या संघर्ष का साधन हिंसा नहीं, बल्कि प्रेम और आत्मबल होना चाहिए। उनके लिए ये केवल व्यक्तिगत गुण नहीं थे, बल्कि **राजनीतिक संघर्ष के औजार** थे।

3. **राजनीति का उद्देश्य – लोक कल्याण**

गांधीजी मानते थे कि सच्ची राजनीति वही है जो **जन सेवा** को प्राथमिकता दे। उनके अनुसार:

सत्ता का उपयोग आत्म-लाभ के लिए नहीं, **सामूहिक भलाई** के लिए होना चाहिए।

नेता का कर्तव्य है कि वह **स्वयं को जनता का सेवक** माने, न कि शासक।

4. **राजनीतिक साधनों की शुद्धता**

गांधीजी ने कहा था:

"अशुद्ध साधनों से प्राप्त किया गया लक्ष्य भी अशुद्ध होता है।"**

इसका अर्थ यह है कि **राजनीतिक उद्देश्य भले ही महान हो**, लेकिन यदि उसके लिए गलत या अनैतिक रास्ता अपनाया गया हो, तो वह उद्देश्य भी नैतिक नहीं रह जाता।

5. **स्वराज – आत्म-नियंत्रण और नैतिक शासन**

गांधीजी का "स्वराज" केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं था। उनका स्वराज का अर्थ था:

व्यक्ति और समाज दोनों का **नैतिक और आत्मिक विकास**।

ऐसी शासन प्रणाली जिसमें **सत्य, अहिंसा और नैतिकता** ही मूल आधार हों।

6. **राजनीतिक नेताओं के लिए आदर्श आचरण**

गांधीजी के अनुसार, राजनेता को:

सादा जीवन जीना चाहिए।

लोभ, मोह और सत्ता की लालसा से दूर रहना चाहिए।

जनता के प्रति जवाबदेह और पारदर्शी होना चाहिए।

✍ **निष्कर्ष (Conclusion)** महात्मा गांधी ने राजनीति को **सत्य, सेवा और नैतिकता** से जोड़ा। उनके लिए राजनीति केवल नीतियों और सत्ता का खेल नहीं, बल्कि **मानवता की सेवा का माध्यम** थी। आज जब राजनीति में भ्रष्टाचार, हिंसा और स्वार्थ हावी हैं, गांधीजी का यह सिद्धांत पहले से कहीं

अधिक प्रासंगिक हो गया है। उनका मानना था कि जब तक राजनीति नैतिक नहीं होगी, तब तक समाज और राष्ट्र का सच्चा कल्याण संभव नहीं है।

 **साधन और साध्य का सिद्धांत (Theory of Ends and Means) – महात्मा गांधी का दृष्टिकोण**

महात्मा गांधी के राजनीतिक और नैतिक दर्शन में **"साधन और साध्य" (Means and Ends)** का सिद्धांत एक केंद्रीय विचार है। गांधीजी का मानना था कि **जैसे साधन होंगे, वैसा ही साध्य होगा।** वे यह दृढ़ता से मानते थे कि कोई भी अच्छा उद्देश्य (साध्य) तभी वास्तविक और नैतिक रूप से स्वीकार्य होगा जब उसे प्राप्त करने के लिए अपनाए गए साधन (उपाय या तरीका) भी नैतिक हों।

 **गांधीजी का मूल विचार:  "अशुद्ध साधनों से प्राप्त किया गया लक्ष्य भी अशुद्ध होता है।"**

गांधीजी के अनुसार, अगर हम किसी अच्छे उद्देश्य को पाने के लिए गलत रास्ता अपनाते हैं — जैसे हिंसा, झूठ, धोखा या छल — तो वह उद्देश्य भी भ्रष्ट हो जाता है, भले ही वह बाहर से अच्छा क्यों न लगे।

 **मुख्य बिंदु:** 1.  **साध्य (Ends) और साधन (Means) का परस्पर संबंध:**

गांधीजी ने कहा कि **साधन और साध्य एक सिक्के के दो पहलू** हैं।

जैसे **अच्छे बीज से ही अच्छा फल** मिल सकता है, वैसे ही **अच्छे साधनों से ही अच्छा लक्ष्य** प्राप्त हो सकता है।

2.  **नैतिक साधनों पर बल:  * गांधीजी ने अपने हर आंदोलन (जैसे सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन) में **अहिंसा, सत्य, प्रेम और आत्मबल** को ही साधन के रूप में अपनाया।

* उनका मानना था कि यदि हम **नैतिक मूल्यों को छोड़ देंगे**, तो आज़ादी या कोई भी उद्देश्य खोखला होगा।

3.  **"उद्देश्य महान है, इसलिए कोई भी तरीका चलेगा" – इस सोच का विरोध:**

* कई क्रांतिकारी यह मानते थे कि यदि उद्देश्य (जैसे स्वतंत्रता) महान है, तो हिंसा भी जायज़ है। गांधीजी ने इस सोच का विरोध करते हुए कहा कि **अगर हम बुराई से बुराई को हटाएंगे, तो वह टिकेगी नहीं**।

4.  **साधन ही साध्य बन जाता है:**

गांधीजी के अनुसार:

"हम अपने साधनों को जितना अधिक पवित्र बनाएँगे, उतना ही पवित्र लक्ष्य मिलेगा।"**

इसका अर्थ यह है कि **यदि रास्ता नैतिक है**, तो वह स्वयं में एक लक्ष्य बन जाता है और वह व्यक्ति को आंतरिक रूप से भी शुद्ध करता है।

 **उदाहरण:**

उद्देश्य (साध्य) | अनैतिक साधन | गांधीजी की प्रतिक्रिया |

| ---------- | ---------- | ---------- |

| स्वतंत्रता | हिंसा, हत्या | अस्वीकार्य |

| सामाजिक सुधार | बलपूर्वक थोपना | अस्वीकार्य |

| न्याय | पक्षपात, झूठ | अस्वीकार्य |

गांधीजी ने हमेशा **अहिंसा, सत्य, त्याग और आत्मसंयम** को अपनाकर ही अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी।

**निष्कर्ष (Conclusion):**

महात्मा गांधी का "साधन और साध्य का सिद्धांत" हमें यह सिखाता है कि:

* लक्ष्य जितना भी महान क्यों न हो, उसे प्राप्त करने का तरीका भी उतना ही **नैतिक, सत्यनिष्ठ और न्यायपूर्ण** होना चाहिए।* यदि हम गलत रास्तों से सही लक्ष्य तक पहुँचते हैं, तो वह सफलता नहीं, बल्कि **नैतिक विफलता** कहलाएगी।

आज के समय में, जब सफलता के लिए कोई भी तरीका अपनाना आम हो गया है, गांधीजी का यह सिद्धांत **समाज, राजनीति और व्यक्तिगत जीवन** में एक **मूल्यवान मार्गदर्शक** बन सकता है।

### **साधन और साध्य का सिद्धांत (Theory of Ends and Means) – महात्मा गांधी का दृष्टिकोण**

महात्मा गांधी के राजनीतिक और नैतिक दर्शन में **"साधन और साध्य" (Means and Ends)** का सिद्धांत एक केंद्रीय विचार है। गांधीजी का मानना था कि **जैसे साधन होंगे, वैसा ही साध्य होगा।** वे यह दृढ़ता से मानते थे कि कोई भी अच्छा उद्देश्य (साध्य) तभी वास्तविक और नैतिक रूप से स्वीकार्य होगा जब उसे प्राप्त करने के लिए अपनाए गए साधन (उपाय या तरीका) भी नैतिक हों।

**गांधीजी का मूल विचार:**

अशुद्ध साधनों से प्राप्त किया गया लक्ष्य भी अशुद्ध होता है।"**

गांधीजी के अनुसार, अगर हम किसी अच्छे उद्देश्य को पाने के लिए गलत रास्ता अपनाते हैं — जैसे हिंसा, झूठ, धोखा या छल — तो वह उद्देश्य भी भ्रष्ट हो जाता है, भले ही वह बाहर से अच्छा क्यों न लगे।

मुख्य बिंदु:**

1. **साध्य (Ends) और साधन (Means) का परस्पर संबंध:**

गांधीजी ने कहा कि **साधन और साध्य एक सिक्के के दो पहलू** हैं।

जैसे **अच्छे बीज से ही अच्छा फल** मिल सकता है, वैसे ही **अच्छे साधनों से ही अच्छा लक्ष्य** प्राप्त हो सकता है।

2. **नैतिक साधनों पर बल:** गांधीजी ने अपने हर आंदोलन (जैसे सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन) में **अहिंसा, सत्य, प्रेम और आत्मबल** को ही साधन के रूप में अपनाया।* उनका मानना था कि यदि हम **नैतिक मूल्यों को छोड़ देंगे**, तो आज़ादी या कोई भी उद्देश्य खोखला होगा।

3. **"उद्देश्य महान है, इसलिए कोई भी तरीका चलेगा" – इस सोच का विरोध:**

* कई क्रांतिकारी यह मानते थे कि यदि उद्देश्य (जैसे स्वतंत्रता) महान है, तो हिंसा भी जायज़ है।

* गांधीजी ने इस सोच का विरोध करते हुए कहा कि **अगर हम बुराई से बुराई को हटाएंगे, तो वह टिकेगी नहीं**।

4. **साधन ही साध्य बन जाता है:**

गांधीजी के अनुसार:

"हम अपने साधनों को जितना अधिक पवित्र बनाएँगे, उतना ही पवित्र लक्ष्य मिलेगा।"**

इसका अर्थ यह है कि **यदि रास्ता नैतिक है**, तो वह स्वयं में एक लक्ष्य बन जाता है और वह व्यक्ति को आंतरिक रूप से भी शुद्ध करता है।

उदाहरण:**

| उद्देश्य (साध्य) | अनैतिक साधन | गांधीजी की प्रतिक्रिया |

| ---------- | ---------- | ---------- |

| स्वतंत्रता | हिंसा, हत्या | अस्वीकार्य |

| सामाजिक सुधार | बलपूर्वक थोपना | अस्वीकार्य |

| न्याय | पक्षपात, झूठ | अस्वीकार्य |

गांधीजी ने हमेशा **अहिंसा, सत्य, त्याग और आत्मसंयम** को अपनाकर ही अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी।

**निष्कर्ष (Conclusion):**

महात्मा गांधी का "साधन और साध्य का सिद्धांत" हमें यह सिखाता है कि:

* लक्ष्य जितना भी महान क्यों न हो, उसे प्राप्त करने का तरीका भी उतना ही **नैतिक, सत्यनिष्ठ और न्यायपूर्ण** होना चाहिए।* यदि हम गलत रास्तों से सही लक्ष्य तक पहुँचते हैं, तो वह सफलता नहीं, बल्कि **नैतिक विफलता** कहलाएगी।

आज के समय में, जब सफलता के लिए कोई भी तरीका अपनाना आम हो गया है, गांधीजी का यह सिद्धांत **समाज, राजनीति और व्यक्तिगत जीवन** में एक **मूल्यवान मार्गदर्शक** बन सकता है।

### □ **गांधीजी के समानता (Equality) पर विचार**

महात्मा गांधी ने जीवनभर **समानता** (Equality) के सिद्धांत का समर्थन किया और समाज में व्याप्त **भेदभाव, ऊंच-नीच और असमानताओं** के विरुद्ध संघर्ष किया। उनके लिए समानता का अर्थ केवल राजनीतिक या कानूनी समानता नहीं था, बल्कि **सामाजिक, आर्थिक और मानवीय स्तर पर समानता** था।

□ **गांधीजी के समानता पर मुख्य विचार:**

1. □ **सभी मनुष्यों की आत्मा एक समान है**

गांधीजी मानते थे कि **हर व्यक्ति में ईश्वर का अंश** है, इसलिए कोई किसी से ऊँचा या नीचा नहीं हो सकता। उनके अनुसार, जाति, धर्म, रंग, लिंग या वर्ग के आधार पर **कोई भी भेदभाव अमानवीय और अन्यायपूर्ण** है।

2. □ **जातिगत भेदभाव का विरोध**

* गांधीजी ने **छुआछूत और जातिवाद** को समाज की सबसे बड़ी बुराई कहा।

* उन्होंने दलितों को **"हरिजन"** (ईश्वर के लोग) कहा और उनके उत्थान के लिए विशेष अभियान चलाए।

* मंदिरों में दलितों के प्रवेश, शिक्षा और पानी जैसे मूल अधिकारों के लिए उन्होंने सामाजिक आंदोलनों का नेतृत्व किया।

*आर्थिक समानता की वकालत**

* गांधीजी पूंजीवाद या समाजवाद के कट्टर समर्थक नहीं थे, लेकिन उन्होंने **"ट्रस्टीशिप" (Trusteeship)** का सिद्धांत दिया। * वे मानते थे कि अमीर लोगों को अपनी संपत्ति को समाज की **संपत्ति की तरह मानना चाहिए** और उसका उपयोग जनकल्याण में करना चाहिए।

* उन्होंने **विलासिता और भोग** के खिलाफ साधारण जीवन और **स्वावलंबन** का आदर्श प्रस्तुत किया।

**महिला-पुरुष समानता**

* गांधीजी ने नारी को **पुरुष के बराबर** अधिकारों का हकदार माना।

* उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं को आगे लाकर यह साबित किया कि **नारी भी राष्ट्र निर्माण में समान रूप से सक्षम है**।

5. □ **धार्मिक समानता**

* गांधीजी ने सभी धर्मों का सम्मान किया और कभी भी एक धर्म को दूसरे से श्रेष्ठ नहीं माना।

* वे मानते थे कि **सच्चा धर्म वही है जो दूसरों के धर्म का भी उतना ही सम्मान करे जितना अपने का।**

निष्कर्ष (Conclusion):** महात्मा गांधी के लिए समानता कोई केवल राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि **एक जीने का तरीका** था।

उनका विश्वास था कि जब तक समाज में **जातिगत, आर्थिक, लैंगिक और धार्मिक भेदभाव** रहेगा, तब तक सच्चा स्वतंत्र भारत संभव नहीं है। वे जीवनभर एक ऐसे समाज की कल्पना करते रहे जहाँ

कोई छोटा-बड़ा न हो**

हर किसी को सम्मान मिले**

सेवा, करुणा और प्रेम** समानता के मूल आधार बनें

□ **गांधीजी के स्वतंत्रता (Liberty) पर विचार**

महात्मा गांधी के लिए **स्वतंत्रता** (Liberty) केवल राजनीतिक आज़ादी तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका अर्थ **व्यक्ति की आत्मा, शरीर, सोच, और जीवन के हर पहलू पर स्वतंत्रता** से था। वे एक ऐसी स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे जो **सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और आत्मिक** रूप से हर व्यक्ति को सशक्त बनाए।

*गांधीजी के स्वतंत्रता पर मुख्य विचार:**

1. **राजनीतिक स्वतंत्रता – पराधीनता का विरोध**

गांधीजी ने अंग्रेज़ी शासन को केवल राजनैतिक गुलामी नहीं, बल्कि **मानव आत्मा की बेड़ियाँ** कहा।

* वे मानते थे कि जब तक भारत **राजनीतिक रूप से स्वतंत्र** नहीं होगा, तब तक कोई भी नागरिक सच्चा स्वतंत्र नहीं बन सकता।

* लेकिन उनका उद्देश्य केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि **व्यक्ति के चरित्र और आत्मबल का उत्थान** था।

2. **आत्म-स्वराज (Self-Rule) का विचार**

* गांधीजी ने **"स्वराज"** को केवल राजनीतिक आज़ादी नहीं, बल्कि **आत्म-नियंत्रण** माना।

* उनके अनुसार:

"स्वराज का अर्थ है – स्वयं पर शासन करना।"**

* यानी जो व्यक्ति अपने विचार, इंद्रियों, इच्छाओं और कर्मों पर नियंत्रण रखता है, वही वास्तव में स्वतंत्र है।

3. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता**

गांधीजी का मानना था कि हर व्यक्ति को:

विचारों की स्वतंत्रता**

आस्था की स्वतंत्रता**

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता**

कार्य और रोज़गार की स्वतंत्रता**

मिलनी चाहिए, लेकिन ये स्वतंत्रता **दूसरों के अधिकारों का हनन किए बिना** होनी चाहिए।

4. **आर्थिक स्वतंत्रता**

* गांधीजी ने कहा कि **भूखे व्यक्ति के लिए ईश्वर रोटी में है।**

* जब तक जनता **आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर** नहीं होगी, तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी है।

उन्होंने **ग्रामीण उद्योग, खादी और स्वदेशी** को बढ़ावा दिया ताकि हर व्यक्ति को **रोज़गार और आत्मसम्मान** मिले।

5. **अहिंसा के साथ स्वतंत्रता**

* गांधीजी के लिए स्वतंत्रता का रास्ता **अहिंसा और सत्य** से होकर गुजरता है।

* वे मानते थे कि स्वतंत्रता अगर **हिंसा और नफरत** से प्राप्त की जाए तो वह स्थायी और नैतिक नहीं हो सकती।

**उद्धरण (Quote):**

"स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं यदि उसमें गलती करने की स्वतंत्रता भी शामिल न हो।"**

यह कथन गांधीजी की **व्यापक सोच** को दर्शाता है — जहां स्वतंत्रता का अर्थ केवल अधिकार नहीं, बल्कि **जवाबदेही और आत्मचिंतन** भी है।

**निष्कर्ष (Conclusion):**

महात्मा गांधी के लिए स्वतंत्रता का अर्थ था:

* केवल शासन से मुक्ति नहीं,

* बल्कि **व्यक्ति के तन, मन, आत्मा और समाज** की हर बेड़ी से मुक्ति।

वे एक ऐसे भारत का सपना देखते थे जहाँ हर नागरिक **आत्मनिर्भर, नैतिक, सचेत और जिम्मेदार** हो। उनकी दृष्टि में **स्वतंत्रता के साथ कर्तव्य और आत्मनियंत्रण** अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं। **गांधीजी के अधिकारों (Rights) पर विचार**

महात्मा गांधी के लिए **अधिकार** (Rights) केवल कानूनी या संवैधानिक अधिकार नहीं थे, बल्कि ये व्यक्ति के **कर्तव्यों और नैतिकता** से गहराई से जुड़े हुए थे। वे मानते थे कि अधिकार **मांगे नहीं जाते, कमाए जाते हैं**, और वे तभी टिकते हैं जब व्यक्ति अपने **कर्तव्यों का पालन** करता है।

 **गांधीजी के अधिकारों पर मुख्य विचार:**

1.  **अधिकारों से पहले कर्तव्य**

गांधीजी का स्पष्ट मत था: "यदि हम अपने कर्तव्यों का पालन करें, तो अधिकार अपने-आप मिल जाएंगे।"**

* वे मानते थे कि **कर्तव्य की पूर्ति ही अधिकार की नींव है।**

* यदि हर व्यक्ति अपने सामाजिक, नैतिक और नागरिक कर्तव्यों को निभाए, तो समाज में स्वतः ही समानता और न्याय स्थापित हो जाएगा।

2.  **व्यक्तिगत अधिकार और सामाजिक उत्तरदायित्व**

गांधीजी के अनुसार, कोई भी अधिकार **स्वतंत्रता की असीम छूट** नहीं है।

* हर अधिकार के साथ एक **जिम्मेदारी** जुड़ी होती है — ताकि वह दूसरों के अधिकारों का हनन न करे।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता** होनी चाहिए, लेकिन वह **नफरत फैलाने** के लिए नहीं होनी चाहिए।

* **आस्था की स्वतंत्रता** हो, लेकिन **सांप्रदायिक विद्वेष** के लिए नहीं।

3.  **आत्मिक अधिकार – आत्मा की स्वतंत्रता**

* गांधीजी के लिए सबसे बड़ा अधिकार था: **"आत्मा की स्वतंत्रता"** — यानी सोचने, विश्वास करने, और नैतिकता के साथ जीने का अधिकार।

* वे मानते थे कि अगर व्यक्ति को यह अधिकार न मिले, तो बाकी सभी अधिकार व्यर्थ हैं।

4.  **आर्थिक और सामाजिक अधिकार**

* गांधीजी ने **गरीबी को सबसे बड़ी हिंसा** कहा।

* उनका मानना था कि हर व्यक्ति को **रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानपूर्वक जीवन** जीने का अधिकार होना चाहिए।

* उन्होंने खादी, ग्राम उद्योग, और स्वदेशी को बढ़ावा देकर आर्थिक स्वतंत्रता को अधिकार का रूप दिया।-

5. **अधिकारों की अंधी माँग का विरोध**

* गांधीजी इस बात के खिलाफ थे कि लोग केवल **अपने अधिकारों की माँग करें**, लेकिन कर्तव्यों की उपेक्षा करें।

* उन्होंने कहा कि अगर हम केवल अधिकारों पर जोर देंगे और कर्तव्यों को भूल जाएंगे, तो समाज **स्वार्थी और विघटित** हो जाएगा।

**गांधीजी का प्रसिद्ध कथन:** "सच्चे अधिकार कर्तव्यों की पूर्ति से प्राप्त होते हैं, न कि संघर्ष और हिंसा से।"**

**निष्कर्ष (Conclusion):** महात्मा गांधी के अनुसार, **अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू** हैं।

उन्होंने जीवनभर यह सिखाया कि: अधिकार **मांगे नहीं, अर्जित किए जाते हैं।**

* अधिकार वही टिकते हैं जो **कर्तव्य-निष्ठा और नैतिकता** से जुड़े हों।

* एक आदर्श समाज वही होगा जहाँ नागरिक **अपने कर्तव्यों को प्राथमिकता देंगे**, और परिणामस्वरूप **प्राकृतिक रूप से अधिकारों का संरक्षण** होगा।

**गांधीजी के कर्तव्यों (Duties) पर विचार**

महात्मा गांधी का मानना था कि **कर्तव्य (Duties)** मनुष्य का पहला धर्म है। उनके अनुसार, यदि हर व्यक्ति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करे, तो समाज में **न्याय, स्वतंत्रता और अधिकारों** की स्वाभाविक स्थापना हो जाएगी।

गांधीजी के कर्तव्यों पर मुख्य विचार:** कर्तव्य पहले, अधिकार बाद में

* गांधीजी का प्रसिद्ध कथन: "जहाँ कर्तव्य निभाया जाता है, वहाँ अधिकार अपने आप आ जाते हैं।"

* वे मानते थे कि समाज का कल्याण तभी संभव है जब व्यक्ति **अपने अधिकारों की माँग करने से पहले अपने कर्तव्यों का निर्वहन करे**।

2. **व्यक्तिगत और सामाजिक कर्तव्य**

गांधीजी ने मनुष्य के दो स्तरों पर कर्तव्यों की बात की:

व्यक्तिगत कर्तव्य:**

* सत्य बोलना

* ईमानदारी से जीवन यापन

* आत्म-नियंत्रण रखना

* परिश्रम करना

* हिंसा से दूर रहना

**सामाजिक कर्तव्य:**

* समाज की सेवा करना

* कमजोर और दलितों की सहायता करना

* भेदभाव का विरोध करना

* स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य को बढ़ावा देना

* सामूहिक हित को प्राथमिकता देना

*कर्तव्य और नैतिकता का संबंध**

* गांधीजी के लिए कर्तव्य केवल कानूनी या सामाजिक नियम नहीं था, बल्कि **आध्यात्मिक और नैतिक दायित्व** था। * वे मानते थे कि **कर्तव्य का पालन आत्मा की शुद्धि का मार्ग है।**

4. **कर्तव्य और आत्मनिर्भरता**

* गांधीजी ने आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा था, जिसके लिए उन्होंने हर नागरिक से **श्रम और स्वावलंबन** को अपनाने का आग्रह किया।

* जैसे – खादी पहनना, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना, गांवों को स्वावलंबी बनाना आदि को उन्होंने **राष्ट्रीय कर्तव्य** माना।

5. **कर्तव्यपालन = सच्चा देशभक्त**

* गांधीजी मानते थे कि सच्चा देशभक्त वही है जो:

* अपने परिवार और समाज के प्रति ईमानदार हो,

* सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चले,

* और राष्ट्रहित को सर्वोपरि माने।

गांधीजी का उद्धरण:** "हमारे कर्तव्य ही हमारे अधिकारों की रक्षा करते हैं।"**

निष्कर्ष (Conclusion):** महात्मा गांधी के अनुसार, **कर्तव्यनिष्ठ जीवन ही सच्चा जीवन है।**

उनकी दृष्टि में: कर्तव्य और अधिकार** एक-दूसरे के पूरक हैं।

* जब हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को पूरी ईमानदारी से निभाएगा, तब ही **समानता, स्वतंत्रता और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना हो सकेगी। गांधीजी का यह दृष्टिकोण आज भी हमें यह सिखाता है कि अधिकारों से पहले हमें **कर्तव्यों की भावना को अपनाना चाहिए।**

राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयतावाद (Nationalism and Internationalism in Hindi)**

**राष्ट्रवाद (Nationalism)** और **अंतरराष्ट्रीयतावाद (Internationalism)**, दोनों ही 20वीं शताब्दी की राजनीति, समाज और वैश्विक संबंधों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण विचारधाराएं हैं। इन दोनों के बीच संतुलन बनाना आज के युग में बहुत आवश्यक हो गया है।

राष्ट्रवाद (Nationalism)**

**परिभाषा:** राष्ट्रवाद वह विचारधारा है जिसमें व्यक्ति को अपने राष्ट्र के प्रति गहरा प्रेम, निष्ठा और समर्पण होता है। इसमें देश की **संप्रभुता, संस्कृति, परंपराओं और हितों** को सर्वोपरि माना जाता है।

मुख्य विशेषताएं:**

* देश की एकता और अखंडता के लिए समर्पण

* स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का समर्थन

* राष्ट्रीय संस्कृति, भाषा और इतिहास पर गर्व

* विदेशी हस्तक्षेप के विरोध में एकजुटता

अत्यधिक राष्ट्रवाद के खतरे: * दूसरे देशों या जातियों के प्रति घृणा

* संकीर्ण सोच और असहिष्णुता

* सांप्रदायिकता या उग्र राष्ट्रवाद (जैसे फासीवाद, नाज़ीवाद)

अंतरराष्ट्रीयतावाद (Internationalism)**

परिभाषा:** अंतरराष्ट्रीयतावाद वह विचारधारा है जो मानती है कि **सभी देश और मानवता एक वैश्विक परिवार** का हिस्सा हैं। इसमें सहयोग, शांति, और वैश्विक विकास को प्राथमिकता दी जाती है।

मुख्य विशेषताएं:**

* विश्व शांति और सहयोग के प्रति प्रतिबद्धता

* सभी राष्ट्रों की समानता और गरिमा का सम्मान

* वैश्विक समस्याओं (जैसे पर्यावरण, गरीबी, आतंकवाद) का संयुक्त समाधान

* जाति, धर्म, भाषा से ऊपर मानवता का भाव

राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयतावाद के बीच संबंध:**

| बिंदु | राष्ट्रवाद | अंतरराष्ट्रीयतावाद |

| --- | --- | --- |

| प्राथमिकता | अपने राष्ट्र के हित | सम्पूर्ण मानवता का कल्याण |

| दृष्टिकोण | सीमित (देश तक) | व्यापक (पूरे विश्व तक) |

| उद्देश्य | राष्ट्रीय एकता, स्वाभिमान | वैश्विक शांति, सहयोग |

| खतरा | संकीर्णता, कट्टरता | राष्ट्रीय पहचान की अनदेखी |

*महात्मा गांधी** ने इन दोनों विचारों में संतुलन की बात की थी:

"मैं ऐसा विश्व नागरिक बनना चाहता हूँ, जो सच्चा भारतीय भी हो।"**

निष्कर्ष (Conclusion):** राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयतावाद **विरोधी नहीं, पूरक विचारधाराएं** हैं।

जहाँ राष्ट्रवाद से हमें **अपनी पहचान, आत्मसम्मान और संस्कृति** की रक्षा करने की प्रेरणा मिलती है, वहीं अंतरराष्ट्रीयतावाद से हम **वैश्विक भाईचारे, शांति और सहयोग** की भावना सीखते हैं।

आज के वैश्वीकरण के युग में ज़रूरी है कि हम **राष्ट्र के प्रति निष्ठा** रखते हुए भी **वैश्विक जिम्मेदारियों** को समझें और निभाएं।

## Unit-3

### महात्मा गांधी के लोकतंत्र (Democracy) पर विचार**

महात्मा गांधी का लोकतंत्र के प्रति दृष्टिकोण केवल राजनीतिक ढांचे तक सीमित नहीं था। वे लोकतंत्र को एक **नैतिक, सामाजिक और आत्मिक व्यवस्था** मानते थे, जिसमें **व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, और समानता** का पूर्ण सम्मान हो।

*गांधीजी के लोकतंत्र पर मुख्य विचार:**

1 लोकतंत्र का अर्थ – जनता का शासन**

गांधीजी के अनुसार: लोकतंत्र का असली अर्थ है – जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन।"

वे मानते थे कि लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब प्रत्येक नागरिक **सजग, जिम्मेदार और नैतिक** हो।

केवल वोट देना ही लोकतंत्र नहीं, बल्कि **जनसेवा, पारदर्शिता और सहभागिता** लोकतंत्र की आत्मा है।

2. नैतिक मूल्यों पर आधारित लोकतंत्र**

* गांधीजी के लिए लोकतंत्र **सत्य, अहिंसा, करुणा और सेवा** जैसे नैतिक सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। * उन्होंने कहा:

"लोकतंत्र तभी टिकेगा जब वह नैतिक मूल्यों पर आधारित हो।"**

3. **ग्राम स्वराज – गांधीजी का आदर्श लोकतंत्र**

गांधीजी ने लोकतंत्र को **नीचे से ऊपर (bottom-up approach)** की प्रक्रिया माना।

उनका सपना था: "हर गाँव एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर इकाई बने।"

जिसे उन्होंने ग्राम स्वराज (Village Self-Rule)** कहा। उन्होंने चाहा कि हर नागरिक **स्थानीय शासन** में भाग ले और निर्णयों में शामिल हो

4. **लोकतंत्र में समानता और भाईचारा**

गांधीजी मानते थे कि लोकतंत्र का उद्देश्य है: सभी को बराबरी का अधिकार देना**

दलितों, महिलाओं और वंचितों को सम्मान देना** धर्म, जाति, वर्ग और भाषा के आधार पर भेदभाव को समाप्त करना**

5. **सत्तालोलुप और हिंसक राजनीति का विरोध**

गांधीजी ने सत्ता की राजनीति, लालच, हिंसा और स्वार्थ को लोकतंत्र के लिए घातक माना।

उन्होंने कहा कि यदि **लोकतंत्र में नैतिकता और सेवा की भावना नहीं होगी**, तो वह केवल भीड़ का शासन** बन जाएगा।

गांधीजी के प्रसिद्ध उद्धरण:** "लोकतंत्र अनुशासित और आत्म-नियंत्रित लोगों के बिना नहीं चल सकता।"**

"लोकतंत्र, स्वतंत्रता का अभ्यास करने का एक साधन है, न कि केवल बहुमत की तानाशाही।"**

निष्कर्ष (Conclusion):** महात्मा गांधी का लोकतंत्र का विचार केवल एक **राजनीतिक प्रणाली** नहीं था, बल्कि यह एक **नैतिक, सामाजिक और मानवीय व्यवस्था** थी।

उनकी दृष्टि में लोकतंत्र वही है जिसमें: हर व्यक्ति को **स्वतंत्रता, समानता और सम्मान** मिले,

* निर्णयों में **जनभागीदारी** हो, और राजनीति का आधार **सेवा, सत्य और अहि

*महात्मा गांधी के आदर्श समाज पर विचार** महात्मा गांधी ने अपने विचारों, आंदोलनों और जीवनशैली के माध्यम से **एक ऐसे समाज की कल्पना की**, जो न केवल भौतिक रूप से समृद्ध हो, बल्कि **नैतिक, आत्मिक और मानवीय मूल्यों** से भी परिपूर्ण हो। गांधीजी का **"आदर्श समाज" (Ideal Society)** एक ऐसा समाज है जहाँ **सत्य, अहिंसा, समानता, सेवा और न्याय** ही जीवन का मूल आधार हों।

गांधीजी के आदर्श समाज की प्रमुख विशेषताएँ:**

1. **अहिंसा पर आधारित समाज**

गांधीजी के आदर्श समाज की बुनियाद **अहिंसा (Non-violence)** है।

* वहाँ कोई **हिंसा, युद्ध, नफरत, या द्वेष** नहीं होगा।

* सभी मतभेद **संवाद और सहिष्णुता** से सुलझाए जाएंगे।

2. **समानता और भेदभाव-रहित समाज**

उनका आदर्श समाज वह है जहाँ:

जाति, धर्म, लिंग, वर्ग के आधार पर कोई भेदभाव न हो।

* सबको **सम्मान, शिक्षा, और अवसर** मिले।

* **छुआछूत, जातिवाद और ऊँच-नीच** जैसी कुरीतियाँ न हों।

3. **आत्मनिर्भर और ग्राम-केंद्रित समाज**

* गांधीजी का आदर्श समाज **ग्राम स्वराज (Village Self-rule)** पर आधारित है।

* हर गाँव **स्वावलंबी**, **स्वशासित** और **स्थानीय संसाधनों** से सम्पन्न हो।

* **शहरों के केंद्रीकरण** के बजाय, गाँवों को विकास का मूल केंद्र माना जाए।

4. **नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों वाला समाज**

गांधीजी के आदर्श समाज में **धर्म का स्थान होगा, लेकिन सांप्रदायिकता का नहीं।**

* वहाँ व्यक्ति **सत्य, संयम, त्याग और करुणा** जैसे मूल्यों को अपनाएगा।

* भौतिक भोग की बजाय **सरल जीवन और उच्च विचार** को प्राथमिकता दी जाएगी।

5. **आर्थिक न्याय और ट्रस्टीशिप**

गांधीजी ने आर्थिक समानता के लिए **ट्रस्टीशिप (Trusteeship)** का सिद्धांत दिया।

* अमीर व्यक्ति अपनी संपत्ति को **समाज की धरोहर** माने और उसका उपयोग जनकल्याण में करे। श्रम की प्रतिष्ठा** हो — सब कामों को समान आदर मिले।

6. **सभी धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का सम्मान**

गांधीजी का आदर्श समाज **धार्मिक सहिष्णुता** पर टिका है।

* वहाँ सभी धर्मों और मान्यताओं का आदर हो, और कोई किसी पर अपना मत न थोपे।

**गांधीजी का प्रसिद्ध कथन:** मेरा आदर्श समाज वह है जिसमें कोई शोषण न हो, कोई भूखा न सोए, और हर व्यक्ति स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के साथ जी सके।"**

निष्कर्ष (Conclusion):**

महात्मा गांधी का आदर्श समाज:

कोई **सपना मात्र** नहीं था,

बल्कि एक **व्यवहारिक लक्ष्य** था जिसे सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन, और नैतिकता के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

आज के समय में, जब समाज **हिंसा, भेदभाव, और नैतिक पतन** से जूझ रहा है, गांधीजी की यह कल्पना एक **प्रेरणा** है, एक **दिशा है** — एक **मानवता पर आधारित समाज** की ओर।

**महात्मा गांधी के राज्य और सरकार पर विचार** महात्मा गांधी की दृष्टि में **राज्य (State)** और **सरकार (Government)** का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि **सेवा करना और नैतिक मूल्यों पर आधारित समाज का निर्माण करना** होना चाहिए। गांधीजी ने राज्यसत्ता की **हिंसात्मक और केंद्रीकृत प्रवृत्ति** का विरोध किया और एक **नैतिक, विकेंद्रीकृत, और जनता-केंद्रित शासन व्यवस्था** की वकालत की।

गांधीजी के राज्य एवं सरकार पर मुख्य विचार:**

1. □ **राज्य = आवश्यक बुराई (Necessary Evil)**

* गांधीजी के अनुसार: "राज्य एक आवश्यक बुराई है।"**

* वे मानते थे कि सरकार का हस्तक्षेप जितना **कम से कम** हो, उतना बेहतर है।

* वे एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे जहाँ **व्यक्ति स्वयं अपने जीवन का संचालन कर सके**, और राज्य का हस्तक्षेप बहुत सीमित हो।

2. □ **ग्राम स्वराज – गांधीजी का आदर्श राज्य**

गांधीजी ने सत्ता के विकेंद्रीकरण (Decentralization) की बात की। उनका आदर्श राज्य वह था जिसमें:

हर गाँव **स्वशासित (Self-Governed)** हो

* निर्णय **स्थानीय स्तर पर** लिए जाएँ

* प्रत्येक नागरिक शासन में **सीधा भागीदार** हो

* राज्य **सेवा का माध्यम** बने, न कि शक्ति का केंद्र

हर गाँव एक स्वतंत्र गणराज्य होगा। ❞ — महात्मा गांधी

3. □ **नैतिकता और सेवा पर आधारित सरकार**

गांधीजी के अनुसार, सरकार का काम है:

* जनता की सेवा करना

* गरीबों, दलितों और वंचितों का कल्याण करना

* सत्य, अहिंसा और समानता जैसे मूल्यों को बढ़ावा देना

* उन्होंने कहा: > **"सच्ची सरकार वह है जो सबसे कमजोर और गरीब व्यक्ति के लिए काम करे।"**

4. **केंद्रीकृत और हिंसात्मक सत्ता का विरोध** * गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार की **केंद्रीकृत, शोषणकारी और हिंसात्मक सत्ता** का विरोध किया * वे मानते थे कि जब सरकार अत्यधिक शक्तिशाली हो जाती है, तो वह **व्यक्ति की स्वतंत्रता और आत्मबल** को कुचल देती है।

5. **राज्य और व्यक्ति का संबंध**

* गांधीजी व्यक्ति को राज्य से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे।

* उनका मानना था कि: "राज्य व्यक्ति के लिए है, व्यक्ति राज्य के लिए नहीं।" * उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति अपने **कर्तव्यों और नैतिकता** को निभाता है, तो राज्य की भूमिका **स्वाभाविक रूप से सीमित हो जाती है।**

**महात्मा गांधी के कुछ प्रसिद्ध उद्धरण:**

"राज्य जब हिंसा का उपयोग करता है, तो वह नैतिकता से गिर जाता है।"**

"मुझे ऐसा राज्य चाहिए जो अपने नागरिकों को स्वतंत्रता दे, उनका शोषण न करे, और सेवा का माध्यम बने।"**

निष्कर्ष (Conclusion):**महात्मा गांधी का राज्य और सरकार के प्रति दृष्टिकोण **परंपरागत राजनीति से बिल्कुल अलग** था।

वे एक ऐसे राज्य की कल्पना करते थे जो:

*नैतिक मूल्यों पर आधारित** हो, *केंद्रीकरण की बजाय विकेंद्रीकरण** पर विश्वास करे,

* और जिसका प्रमुख उद्देश्य हो — **जनता की सेवा, न्याय और आत्मनिर्भरता।**

गांधीजी के विचार आज भी हमें यह सिखाते हैं कि **राजनीति और सत्ता का उद्देश्य केवल शासन नहीं, बल्कि सेवा, न्याय और नैतिकता** होना चाहिए।

 **महात्मा गांधी के ग्राम समाज (Village Community / ग्राम समाज) पर विचार**

महात्मा गांधी का मानना था कि **भारत की आत्मा गाँवों में बसती है।** उन्होंने आजीवन **ग्राम समाज** को भारत की सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पुनर्रचना का केंद्र माना। उनके लिए गाँव केवल रहने की जगह नहीं, बल्कि **आत्मनिर्भर, स्वशासित और नैतिक मूल्यों से युक्त आदर्श समाज** की इकाई था।

गांधीजी के ग्राम समाज पर मुख्य विचार:**

1.  **ग्राम स्वराज की संकल्पना (Concept of Village Swaraj)**

गांधीजी ने **ग्राम स्वराज** (Village Self-rule) की परिकल्पना की, जिसमें:

प्रत्येक गाँव **स्वतंत्र** हो गाँव के लोग **स्वयं अपने निर्णय** लें

शासन नीचे से ऊपर की ओर चले (Bottom-up approach) गाँव **राज्य या केंद्र** पर निर्भर न होकर **आत्मनिर्भर** हो “मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूँ जहाँ हर गाँव एक गणराज्य हो।” — महात्मा गांधी

2.  **आत्मनिर्भर ग्राम समाज**

गांधीजी का आदर्श ग्राम समाज वह है जो: *खादी, हस्तशिल्प, कृषि, गौपालन** जैसे स्थानीय संसाधनों पर आधारित हो

* भोजन, वस्त्र, शिक्षा और रोजगार की आवश्यकताओं को **स्थानीय रूप से पूरा** कर सके

* आर्थिक रूप से **स्वावलंबी** हो, ताकि बेरोज़गारी और शोषण से मुक्ति मिले

3.  **समानता और भेदभाव-रहित समाज**

गांधीजी चाहते थे कि गाँव: *जातिवाद, छुआछूत, ऊँच-नीच** से मुक्त हो

* **सभी वर्गों और जातियों** को बराबरी का दर्जा दे

* महिलाएँ भी निर्णय प्रक्रिया में **समान रूप से भागीदारी** करें

4. **नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों वाला समाज**

गांधीजी के ग्राम समाज में: **सत्य, अहिंसा, करुणा, परस्पर सहयोग** जैसे नैतिक मूल्य हों

* जीवन शैली **सरल, संयमित और सात्विक** धर्म को **सांप्रदायिकता से अलग** रखकर सभी धर्मों का सम्मान किया जाए

5. **शिक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्था गाँव में ही** उन्होंने ग्राम समाज के लिए ऐसी शिक्षा की वकालत की जो: *हाथ, दिमाग और दिल** – तीनों का विकास करे

* **बुनियादी शिक्षा (Nai Talim)** के माध्यम से ज्ञान के साथ **कौशल** भी दे

* हर गाँव में **साफ-सफाई, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ और जनजागरूकता** हो

6. **ग्राम समाज = सच्चा लोकतंत्र** * गांधीजी के अनुसार, ग्राम समाज **लोकतंत्र की प्रयोगशाला** है।

* जब हर गाँव स्वशासित होगा और निर्णय जनता स्वयं लेगी, तभी **सच्चा लोकतंत्र** संभव होगा।

* उन्होंने पंचायती राज की नींव डाली, जिसे आज संविधान में भी स्थान मिला है।

*महात्मा गांधी के प्रसिद्ध उद्धरण:** "भारत का भविष्य शहरों में नहीं, गाँवों में है।"**

"गाँवों को जीवित और आत्मनिर्भर बनाए बिना भारत का विकास अधूरा है।"**

निष्कर्ष (Conclusion):** महात्मा गांधी के लिए **ग्राम समाज** केवल सामाजिक ढाँचा नहीं था, बल्कि **भारत के पुनर्निर्माण का आधार** था।

वे एक ऐसे ग्राम समाज की कल्पना करते थे जहाँ:

सभी लोग बराबरी से रहते हों** *आजीविका और सम्मान का अधिकार हर किसी को मिले**

* और जीवन **नैतिकता, सेवा और सरलता** पर आधारित हो

आज जब हम **शहरीकरण और केंद्रीकरण** के प्रभावों से जूझ रहे हैं, गांधीजी का ग्राम समाज का सपना एक **सशक्त, न्यायसंगत और टिकाऊ भारत** की ओर रास्ता दिखाता है।

 **महात्मा गांधी के रामराज्य पर विचार** **महात्मा गांधी** के लिए **'रामराज्य'** केवल एक धार्मिक या पौराणिक संकल्पना नहीं थी, बल्कि यह **एक आदर्श शासन प्रणाली** का प्रतीक था। उनका "रामराज्य" एक ऐसा राज्य था जहाँ **न्याय, समानता, नैतिकता, सेवा और धर्मनिष्ठ शासन** हो — न कि किसी एक धर्म का प्रभुत्व।

गांधीजी के रामराज्य की मुख्य विशेषताएँ:**

1.  **सत्य और अहिंसा पर आधारित शासन**

गांधीजी के अनुसार, रामराज्य का आधार होता है:

*सत्य (Truth)** *अहिंसा (Non-violence) *धर्म (नैतिकता और कर्तव्य)**

* वहाँ शासन का उद्देश्य जनता पर हुकूमत करना नहीं, बल्कि **जनता की सेवा करना** होता है।

2.  **सामाजिक न्याय और समानता**

गांधीजी का रामराज्य एक ऐसा समाज है जहाँ: **जाति, धर्म, वर्ग, लिंग** का कोई भेदभाव न हो

* सबको **बराबरी का दर्जा** मिले *दलितों, महिलाओं और वंचितों** को पूरा सम्मान मिले

❝ मेरे लिए रामराज्य का अर्थ है – ऐसा राज्य जहाँ सबसे गरीब व्यक्ति को भी न्याय मिले। ❞

3.  **आत्मनिर्भर और ग्राम आधारित राज्य** रामराज्य का मॉडल गांधीजी ने **ग्राम स्वराज** के रूप में प्रस्तुत किया: * हर गाँव **स्वशासित** और **आत्मनिर्भर** हो

* स्थानीय निर्णय स्थानीय स्तर पर लिए जाएँ  आर्थिक व्यवस्था **स्वदेशी और श्रम-आधारित** हो

4.  **नैतिकता और धर्मनिष्ठ शासन** गांधीजी का रामराज्य **धर्मनिरपेक्ष** था, लेकिन **धार्मिक मूल्यों** से परिपूर्ण:

धर्म का अर्थ – **कर्तव्य, दया, सेवा और संयम**

* हर शासक और नागरिक को **नैतिक और आत्मानुशासित** होना चाहिए

* रामराज्य में **राजा (शासक)** स्वयं सबसे बड़ा सेवक होता है

5. **व्यक्ति का नैतिक उत्थान** रामराज्य केवल शासन प्रणाली नहीं, बल्कि **व्यक्तियों के नैतिक और आध्यात्मिक विकास** का भी प्रतीक था।

* वहाँ हर नागरिक कर्तव्यनिष्ठ** होता है स्वावलंबी** और **ईमानदार** होता है

* **दूसरों के अधिकारों का सम्मान** करता है

गांधीजी के प्रसिद्ध उद्धरण:** "रामराज्य का अर्थ है – जनता का कल्याण, न्याय, धर्म और सेवा पर आधारित शासन, जिसमें सबसे कमजोर व्यक्ति की भी चिंता की जाती है।"**

"रामराज्य कोई धार्मिक राज्य नहीं, बल्कि नैतिक आदर्शों पर आधारित राज्य है।"**

*निष्कर्ष (Conclusion):** महात्मा गांधी के लिए **रामराज्य** एक **आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था** थी जिसमें: सत्य, अहिंसा और धर्म के सिद्धांतों का पालन होता है

* हर नागरिक को **समान अधिकार, न्याय और सम्मान** मिलता है और शासन सेवा का माध्यम बनता है, न कि शोषण का . रामराज्य = सेवा + नैतिकता + समानता + आत्मनिर्भरता**

गांधीजी का यह आदर्श आज भी **भारत के लोकतंत्र और सामाजिक न्याय** के लिए एक प्रेरण

UNIT-4

## **सत्याग्रह का अर्थ और विचारधारा (Concept of Satyagraha ):**

सत्याग्रह** महात्मा गांधी द्वारा विकसित एक अहिंसात्मक आंदोलन की विचारधारा है, जिसका उद्देश्य अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध बिना हिंसा का प्रयोग किए संघर्ष करना है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है – **"सत्य"** (सत्य/सच्चाई) और **"आग्रह"** (आग्रह करना या दृढ़ रहना)। इस प्रकार, सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है **"सत्य के लिए आग्रह"** या **"सत्य के प्रति दृढ़ता"।**

**सत्याग्रह के प्रमुख तत्व:**

1. **सत्य (Truth):** सत्य को परम धर्म माना गया है। सत्याग्रही को हमेशा सत्य बोलना और उसका पालन करना चाहिए।

2. अहिंसा (Non-violence):** किसी भी स्थिति में हिंसा का सहारा नहीं लेना है, चाहे कितना भी बड़ा अन्याय क्यों न हो।

3. **तपस्या (Self-suffering):** सत्याग्रही को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कष्ट सहने को तैयार रहना चाहिए। दूसरों को नुकसान पहुँचाने की बजाय खुद कष्ट सहकर बदलाव लाना इसका उद्देश्य है।

4. **धैर्य और आत्मबल:** सत्याग्रह में मानसिक बल को अधिक महत्व दिया जाता है, न कि बाहुबल को।

**सत्याग्रह के प्रकार:**नागरिक अवज्ञा (Civil Disobedience):** अन्यायपूर्ण कानूनों का अहिंसात्मक विरोध।

**धारणाएं और उपवास (Fasts and Vows):** आत्मशुद्धि और जनचेतना के लिए उपवास रखना।

**बहिष्कार (Boycott):** अन्यायपूर्ण वस्तुओं, संस्थाओं या कानूनों का बहिष्कार करना।

**इतिहास में सत्याग्रह:**

* 1917 – **चंपारण सत्याग्रह** (बिहार में नील किसानों के लिए)* 1918 – **खेड़ा सत्याग्रह** (गुजरात में कर माफ़ी के लिए)

* 1930 – **नमक सत्याग्रह / दांडी मार्च** (नमक कर के खिलाफ)

*निष्कर्ष:** सत्याग्रह केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक नैतिक और आत्मिक शक्ति है। यह दिखाता है कि बिना हथियार उठाए भी अन्याय और अत्याचार के खिलाफ प्रभावी रूप से लड़ा जा सकता है। सत्याग्रह ने न केवल भारत की स्वतंत्रता में अहम भूमिका निभाई, बल्कि विश्व भर के आंदोलनों को भी प्रेरित किया।

**सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) में अंतर – हिंदी में व्याख्या**

*1. सत्याग्रह (Satyagraha):**

**परिभाषा:** सत्याग्रह महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित एक नैतिक, आत्मिक और अहिंसात्मक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य अन्याय का विरोध **सत्य** और **अहिंसा** के माध्यम से करना है।

*मुख्य विशेषताएँ:**

* सत्य और आत्मबल पर आधारित होता है।

* इसमें **हिंसा का पूर्णतः त्याग** होता है।

* इसमें **आत्मबल (Soul-force)** का प्रयोग होता है, बाहुबल (Physical force) का नहीं।

* सत्याग्रही स्वयं कष्ट सहकर अन्याय के विरुद्ध खड़ा होता है।

* यह केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक आंदोलन भी है।

2. निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance):**

**परिभाषा:** निष्क्रिय प्रतिरोध एक राजनीतिक रणनीति है जिसमें अन्यायपूर्ण शासन या कानूनों का विरोध **हिंसात्मक साधनों के बिना** किया जाता है, पर यह केवल एक **रणनीति** होती है, कोई **आध्यात्मिक दर्शन** नहीं।

**मुख्य विशेषताएँ:**

* इसमें विरोध तो होता है, लेकिन **अहिंसा कोई अनिवार्य सिद्धांत** नहीं होती।

* यह **राजनीतिक उद्देश्य** की प्राप्ति के लिए होता है।

* इसका मूल आधार है विरोध या असहमति, न कि आत्मशुद्धि या नैतिक बल।

* विरोध के पीछे **क्रोध या द्वेष** की भावना हो सकती है।

**गांधीजी के अनुसार अंतर:**

महात्मा गांधी ने कहा कि: "सत्याग्रह निष्क्रिय प्रतिरोध से अधिक व्यापक और गहरा सिद्धांत है। निष्क्रिय प्रतिरोध केवल एक राजनीतिक हथियार है, जबकि सत्याग्रह एक **जीवन मूल्य** है।"

**मुख्य अंतर सारणी में:**

| पहलू | सत्याग्रह (Satyagraha) | निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) |
| --- | --- | --- |
| उद्देश्य | नैतिक व आध्यात्मिक स्तर पर विरोध | राजनीतिक विरोध |
| आधार | सत्य, अहिंसा, आत्मबल | असहमति, विरोध |
| हिंसा के प्रति दृष्टिकोण | पूरी तरह त्याग | केवल रणनीति के रूप में हिंसा से बचाव |

| प्रेरणा | आत्मशुद्धि, नैतिक बल | सरकार या नीति के खिलाफ असहमति |

| मार्गदर्शक सिद्धांत | धर्म, सत्य, प्रेम | राजनीति, असंतोष

| **निष्कर्ष:** * सत्याग्रह एक **नैतिक और आध्यात्मिक आंदोलन** है जो समाज में परिवर्तन लाने के लिए आत्मबल का प्रयोग करता है।

* निष्क्रिय प्रतिरोध एक **राजनीतिक रणनीति** है, जिसमें हिंसा का प्रयोग नहीं किया जाता, लेकिन इसका आधार सत्य और प्रेम नहीं होता।

* गांधीजी ने सत्याग्रह को निष्क्रिय प्रतिरोध से कहीं अधिक श्रेष्ठ और प्रभावी माना।

**सत्याग्रह की विभिन्न तकनीकें महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित **सत्याग्रह** केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक **व्यवस्थित अहिंसात्मक आंदोलन** की श्रृंखला है, जिसमें समाजिक और राजनीतिक अन्याय के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध के कई तरीके अपनाए जाते हैं।

नीचे सत्याग्रह की प्रमुख तकनीकें दी गई हैं:

 **1. असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement):**

* अन्यायपूर्ण शासन, संस्थानों या व्यवस्थाओं से सहयोग न करना।

* सरकारी नौकरियों, विद्यालयों, अदालतों आदि का बहिष्कार करना।

* विदेशी वस्त्रों और उत्पादों का त्याग करना।

 **उदाहरण:**

1920 का गांधीजी का असहयोग आंदोलन, जिसमें लाखों भारतीयों ने ब्रिटिश संस्थाओं से दूरी बनाई।

 **2. नागरिक अवज्ञा (Civil Disobedience):**

अन्यायपूर्ण कानूनों का खुला, अहिंसात्मक उल्लंघन।

* बिना हिंसा के, सच्चाई के साथ कानून का उल्लंघन कर विरोध दर्ज कराना।

 **उदाहरण:**

1930 का **नमक सत्याग्रह**, जिसमें गांधीजी ने ब्रिटिश नमक कानून तोड़ा।

 **3. बहिष्कार (Boycott):**

* सरकार, विदेशी वस्तुओं, अदालतों, स्कूलों या चुनावों का बहिष्कार।

* यह आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक हो सकता है।

*उदाहरण:**

विदेशी कपड़ों का बहिष्कार कर खादी का समर्थन।

 **4. उपवास (Fasting):*** आत्मशुद्धि, विरोध या जनचेतना के लिए उपवास रखना।

* यह आत्मबल का प्रतीक होता है, किसी पर दबाव डालने के लिए नहीं।

**उदाहरण:**

गांधीजी के उपवास अक्सर हिंदू-मुस्लिम एकता या दलित अधिकारों के लिए होते थे।

 **5. शांतिपूर्ण प्रदर्शन (Peaceful Demonstrations):**

जुलूस, सभा, भाषण आदि के माध्यम से जनता में जागरूकता फैलाना।

* किसी विशेष मुद्दे पर जनसमर्थन जुटाना।

**उदाहरण:**

दांडी मार्च के दौरान लोगों का शांतिपूर्ण कूच।

 **6. सत्याग्रही गिरफ्तारी (Voluntary Arrest):**

अन्यायपूर्ण कानूनों का उल्लंघन कर गिरफ्तारी देना।

* इसे आत्मबल और बलिदान के रूप में देखा जाता है।

 **7. हड़ताल (Strike):**

श्रमिकों, किसानों या अन्य वर्गों द्वारा संगठित कार्य बहिष्कार।

* यह तब प्रयोग होता है जब सरकार या प्रबंधक अन्यायपूर्ण नीतियाँ लागू करें।

 **निष्कर्ष:**सत्याग्रह की सभी तकनीकों का मूल आधार है:

* **अहिंसा (Non-violence)**

* **सत्य (Truth)**

* **आत्मबल (Soul-force)**

गांधीजी का मानना था कि इन तरीकों से **दमनकारी व्यवस्था को नैतिक रूप से चुनौती** दी जा सकती है, और सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

यह रहा **सत्याग्रह के मुख्य विशेषताएँ और रूप (Main Features and Forms of Satyagraha in Hindi)** का विस्तृत विवरण:

 **सत्याग्रह की मुख्य विशेषताएँ (Main Features of Satyagraha):**

1.  **अहिंसा (Non-Violence):**

सत्याग्रह की नींव अहिंसा पर टिकी होती है। इसमें किसी भी प्रकार की हिंसा का विरोध किया जाता है, चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक।

2.  **सत्य के लिए आग्रह (Insistence on Truth):**

सत्याग्रही हमेशा सत्य के मार्ग पर चलता है, चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं।

3.  **आत्मबल (Soul-Force):**

इसमें बाहुबल की बजाय आत्मबल (spiritual strength) का प्रयोग होता है। आत्मशक्ति के बल पर विरोध किया जाता है।

4. **आत्मत्याग और सहनशीलता (Self-Sacrifice and Patience):**

सत्याग्रही विरोध करते समय स्वयं कष्ट सहता है, लेकिन प्रतिद्वंद्वी को नुकसान नहीं पहुँचाता।

5. **शांति और अनुशासन (Peace and Discipline):**

सत्याग्रह शांतिपूर्ण होता है, जिसमें अनुशासन का विशेष ध्यान रखा जाता है।

6. **न्याय और नैतिकता पर आधारित इसका उद्देश्य केवल राजनीतिक बदलाव नहीं, बल्कि नैतिक सुधार भी होता है।

**सत्याग्रह के प्रमुख रूप (Forms of Satyagraha):**

| क्रमांक | सत्याग्रह का रूप | विवरण |
| --- | --- | --- |
| 1 | **असहयोग आंदोलन** (Non-Cooperation) | अन्यायपूर्ण शासन या संस्थाओं से सहयोग न करना, जैसे सरकारी नौकरियों, स्कूलों, अदालतों आदि का बहिष्कार। |
| 2 | **नागरिक अवज्ञा** (Civil Disobedience) | अन्यायपूर्ण कानूनों का उल्लंघन करना, लेकिन पूरी तरह से अहिंसात्मक ढंग से। |
| 3 | **बहिष्कार** (Boycott) | विदेशी वस्त्रों, सामानों, संस्थाओं या चुनावों का त्याग कर विरोध जताना। |
| 4 | **उपवास** (Fasting) | आत्मशुद्धि, जनजागरण या अन्याय के विरोध में उपवास रखना। |
| 5 | **शांतिपूर्ण प्रदर्शन** (Peaceful Protest) | जुलूस, रैलियाँ, भाषण आदि के माध्यम से जनसमर्थन जुटाना और विरोध दर्ज कराना। |

| 6 | **हड़ताल** (Strike) | श्रमिकों या अन्य समूहों द्वारा कार्य बहिष्कार कर विरोध करना, विशेषकर आर्थिक या सामाजिक मुद्दों पर। |

| 7 | **स्वेच्छा से गिरफ्तारी देना** (Voluntary Arrest) | अन्याय के विरुद्ध कानून तोड़कर गिरफ्तारी देना, जिससे नैतिक दबाव बने। |

**निष्कर्ष:** सत्याग्रह केवल विरोध करने का माध्यम नहीं, बल्कि यह एक **नैतिक आंदोलन** है जो समाज में **सत्य, अहिंसा और आत्मबल के माध्यम से परिवर्तन लाने** में विश्वास रखता है। इसके विभिन्न रूप परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार अपनाए जाते हैं, लेकिन सभी में एक बात समान रहती है — **शांति और नैतिक बल।